[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3424

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

वर्तमान समाज में नृत्य का बदलता स्वरूप

रेखा मालवीया
नृत्य शिक्षक, इंदौर

आस्येनालम्बयेद् गीतं हस्तेनार्थं प्रदर्शयेत्।
नेन्नाभ्यां दर्शयेद् भावं पादाभ्यां तालमाचरेत्।।

आचार्य नन्दिकेश्वर

अर्थात् जब मुंह से गाना गाया जाए, हाथों की मुद्राओं से गीत के शब्दों का अर्थ बतलाया जाए, आंखो से भाव दिखाये जाएं और पैरों से ताल के अनुसार ठोका दिया जाए तब नृत्य होता है।

मानव जीवन के होते जितने संस्कार।
समाज के उत्सवों का नृत्य है, मुख्य आधार।।

भारत परम्पराओं व संस्कारों का देश है प्रत्येक भारतीय समाज और परम्पराओं से जुड़ा है। समाज और देश को सुदृढ़ करने में नृत्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। नृत्य मानव जीवन को नैतिक कर्तव्यों की ओर उन्मुख करता है।

नृत्य मानवीय अभिव्यक्तियों का एक रसमय प्रदर्शन है। यह एक सार्वभौमिक कला है, जिसका जन्म मानव जीवन के साथ हुआ। बालक जन्म लेते ही रोकर, हाथ–पैर मारकर अपनी भावाभिव्यक्ति करता है कि वह भूखा है। इन्हीं आंगिक क्रियाओं से नृत्य की उत्पत्ति हुई जो सर्वविदित है। नृत्य का आरम्भ आध्यात्म से हुआ। प्रारम्भ में नृत्य मंदिरों में ईश्वर की भक्ति के लिये किया जाता था। बदलते समय के साथ ही मुगल काल में यह मंदिरो से निकलकर राजाओं के दरबार में होने लगा। वर्तमान में नृत्य के मायने और बदल गये है। आज नृत्य मंचो पर आ गया है। नृत्य कलाकार मंच प्रदर्शन करता है, जिससे जन सामान्य इसका पूर्णता से आनन्द लेते है।

वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में नृत्य को एक विषय के रूप में सम्मिलित किये जाने लगा है। नृत्य के महत्व को समझते हुए माता–पिता अपने बच्चों को इस विधा में अग्रसर कर रह है और बच्चे भी बहुत रूचि से नृत्य सीख रहे है। आज हर व्यक्ति एक नये उद्देश्य के साथ नृत्य सीखना चाहता है। कुछ नृत्य को साधना के रूप में लेते हैं, कुछ केवल नृत्य अच्छा लगता है इसलिये सीखते है, कुछ अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए सीखते है तो कुछ परीक्षा देकर डिग्री लेने के लिए, कुछ समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने के लिए और कुछ समाज में होने वाले उत्सवों में करने के लिए भी नृत्य शिक्षा ग्रहण करते है। इन सब बातों को देखते हुए आज शहरों में जगह–जगह अनेक नृत्य संस्थाए खोली जा रही है।

समाज को नयी दिशा देने के लिए वर्तमान समाज में अनेकानेक नृत्य संस्थान है जो नित नवीन प्रयोग कर रहे है। समाज में व्याप्त बुराईयों को समाप्त करने के लिए अनेक प्रयोग किये जा रहे है जिसमें सर्वाधिक सृजनात्मक प्रयोग नृत्य के क्षेत्र में हुए है। वर्तमान में नृत्य के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि नृत्य नाटिकाओं की संरचना व प्रयोग है। वर्तमान में हो रही घटनाओं व प्रकृति पर भी नृत्य नाटिकाओं की रचना हो रही है। जिसके द्वारा आज के समाज को जागरूक किया जा रहा है। नृत्य गुरू डॉ. सुचित्रा हरमलकर ने नारी शक्ति व माँ नर्मदा (नदी) पर नृत्य नाटिका की रचना की। जिसमें नर्मदा के उद्गम से लेकर नदी की वर्तमान स्थिति व सामाजिक श्रद्धा का वर्णन है। नृत्य कला सदा ही रूचिकर रही है जिसे दर्शकों द्वारा सराहा गया है। वर्तमान में नृत्य समाज का अभिन्न अंग है। नृत्य के बिना आज समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

शिक्षा जगत में नृत्य में बहुत से सृजनात्मक प्रयोग हो रहे है। स्कूलों में नृत्य को ऐच्छिक रूचिकर विषय के अन्तर्गत रखा गया है। और वर्षान्त में वार्षिकोत्सव में अलग–अलग प्रकार के नृत्य सिखाये जाते है जिनमें शास्त्रीय नृत्य, लोक नृत्य, पाश्चात्य नृत्य आदि का समावेश किया जाता है। महाविद्यालय स्तर पर भी विद्यार्थी लोक नृत्य एवं शास्त्रीय नृत्य में अपनी कला का प्रदर्शन वार्षिकोत्सव एवं युथ फेस्टीवल में करते है। नृत्य कला के महत्व को समझते हुए राष्ट्रीय सरकार ने केन्द्र तथा प्रदेशों में पृथक रूप से सांस्कृतिक विभाग की स्थापना की, जो संस्थाओं में सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन करते है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा रायगढ़ की कत्थक परम्परा को भोपाल में चक्रधर नृत्य केन्द्र स्थापित किया गया। इस प्रकार उच्च स्तर पर तो नृत्य विधा को प्रोत्साहित किया जा रहा है परन्तु स्कूल स्तर से ही नृत्य शिक्षा प्रारभ करने हेतु अभी कोई योजना नहीं बनाई गई। नृत्य के महत्व को समझते हुए सरकार एवं प्रायवेट दोनो विद्यालयों में नृत्य आरम्भ से एक विषय के

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रूप में रखा जाना चाहिए। ताकि समाज के प्रत्येक व्यक्ति एवं विद्यार्थी को नृत्य की समझ एवं जानकारी मिल सके तथा नृत्य में रूचि रखने वाले विद्यार्थी नृत्य विधा में पारन्गत होकर अपना भविष्य संवारते हुए समाज को उच्च स्तर पर ले जाने हेतु अग्रसर हो सके। समाज के उत्थान के लिए नृत्य विभिन्न क्षेत्रों में मददगार सिद्ध हो रहा है। साथ ही समाज द्वारा नृत्य कलाकार को ऐसे अवसर प्राप्त हो रहे है कि वे इस क्षेत्र में हो रहे सृजन को सभी तक पहुंचा पाये। उदाहरणार्थ –

चिकित्सा के क्षेत्र में :– वर्तमान समाज में चिकित्सा के क्षेत्र में नृत्य व संगीत कला भी अपना योगदान दे रही है। माता–पिता की महत्वकांक्षा के कारण विद्यार्थी अत्यधिक तनाव से गुजर रहे है जिनके कारण विद्यार्थी डिप्रेशन के शिकार हो रहे है। प्रायः यह देखा गया है कि ऐसे विद्यार्थी जब नृत्य करते है तो उनका डिप्रेशन धीरे–धीरे समाप्त हो जाता है और वे अपने आपको स्वस्थ पाते है और उत्साह से भरा जीवन जी पाते है। डिप्रेशन से ग्रसित हर उम्र के व्यक्ति को संगीत व नृत्य द्वारा स्वस्थ किया जा सकता है।

संगोष्ठि एवं समारोह का आयोजन :– वर्तमान में समाज की जागरूकता नृत्य कला में अनेकानेक समारोह के आयोजनों द्वारा देखी जा सकती है। नृत्य प्रदर्शन धर्मी कला है जिसे अपनी अभिव्यक्ति के लिए अवसर चाहिए और यह अवसर गोष्ठी, सम्मेलन, समारोह आदि में प्राप्त होतें हैं। 15 अगस्त व 26 जनवरी पर भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष समारोह आयोजित किये जाते है। समय–समय पर संगोष्ठियों का आयोजन होता है जिसमें कलाकार नृत्य में हो रहे नवीनीकरण व प्राचीन शास्त्रों को विद्यार्थियों तक पहुँचाते है जिससे युवा कलाकारों को मार्गदर्शन प्राप्त होता है। राज्य सरकारों के सांस्कृतिक विभाग द्वारा संगीत व नृत्य के समारोह ऐतिहासिक व धार्मिक स्थलों पर आयोजित होने लगें है। इसमें ऐलोरा नृत्य महोत्सव, खजुराहो नृत्य महोत्सव, गंगा महोत्सव, मालवा उत्सव आदि प्रमुख है। इनके माध्यम से कलाकार अपनी कला में नित नवीन सृजनात्मक कार्य करता है।

रोजगार के रूप में :– सामाजिक दौर में बेरोजगारी एक भीषण समस्या है। नृत्य शिक्षा बेरोजगारी से निपटने के लिए रामबाण का कार्य कर सकती है। नृत्य शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् नृत्य में पारंगत साधक नृत्य को एक रोजगार के रूप में अपना सकते है।

संस्कृति व परंपरा को हस्तांतरित करने में :– नृत्य के माध्यम से समाज की परम्पराएँ अधिक आसानी से नई पीढ़ी को हस्तांतरित की जा सकती है। समाज व देश की संस्कृति को समझने के लिए नृत्य सर्वोत्तम माध्यम है। रामायण, महाभारत, शिवपुराण आदि जैसे ग्रंथो पर नृत्य नाटिका द्वारा समाज तक इन्हें पहुँचाने के प्रयास जारी है। इसमें नृत्य गुरू डॉ. पुरूदाधीच द्वारा 'दुर्गा चरित' व नृत्य गुरू डॉ सुचित्रा हरमलकर द्वारा 'गीतरामायण' आदि को युगल व नृत्य नाटिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार जब भारतीय ग्रंथ, काव्य व संस्कृति को नृत्य के माध्यम से जन सामान्य के सामने प्रस्तुत करतें है तो वह मानस पटल पर अपनी अमिट छाप बना लेते है।

वर्तमान में भारतीय समाज आध्यात्म से भौतिकवाद की ओर अग्रसर हो रहा है ऐसे समय में भारत की पहचान बनाये रखने के लिए नृत्य कला का सहारा लेकर विभिन्न आयोजनों के द्वारा समाज के उत्थान का बीड़ा उठाया जा सकता है। धार्मिक आयोजनों में नृत्य के माध्यम से सद्विचारों व सत्कर्मों का प्रचार–प्रसार किया जा सकता है।

सृजनात्मक कलाएं समाज और देश को एक नई दिशा देने में समर्थ है। जिनमें नृत्य कला से देश और समाज के नैतिक उत्थान में विशेष सहायता मिलती है। नर्तक स्वयं आनंदित होकर दूसरों को आनंदित करता है। समाज के समस्त प्राणी विषयों के आनंद के लिए प्रयत्नशील रहते है। जिसके न मिलने पर वे अपने जीवन को संघर्षशील बना लेते है एवं विषयों को पाने के लिए नैतिक या अनैतिक किसी भी ढंग को अपनानें लगते है। जिससे अनैतिकता और अधर्म बढ़ जाता हैं, और देश व समाज का स्तर गिर जाता है। नृत्य वह कला है जो मानव को सांसारिक विषयों से अलग कर देती है तथा समाज में नैतिक स्तर को बनाये रखती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि नृत्य विधा हर स्तर पर समाज के लिए मददगार साबित हो रही है। आवश्यकता है नृत्य के महत्व को समझकर उसे अंगीकार करने की।

संदर्भ –

1 *डॉ. पुरू दाधिच, डॉ विभा दाधिच/नृत्य निबंध*
2 *डॉ पुरू दाधिच/कथक नृत्य शिक्षा प्रथम भाग व द्वितीय भाग*